नारीवादी आन्दोलन और हिन्दी साहित्य में स्त्री लेखन के बदलते सन्दर्भ

साहीन खान,
शोधार्थी–हिन्दी,
जीवाजी विश्वविद्यालय,ग्वालियर(म.प्र.)

प्रो0 (डॉ0) डी0 आर0 राहुल,
प्राचार्य,
शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,दतिया,म.प्र

शोध सारांश

पाश्चात्य देशों में स्त्री–मुक्ति के लिए नारीत्व से मुक्ति की घोषणा की गई और पुरुष–मुक्त जीवन की कल्पना भी की गई तो संयत विचारधारा के तहत नारी सशक्तिकरण–नारी सबलीकरण के लिए विचार–विमर्श सक्रिय होते गये।इसमें कोई दो राय नही कि स्त्रियों के अस्तित्व को सदियों से नकारा गया है। पिछले कुछ वर्षों से स्त्रियों की समस्याओं और उनकी परिस्थितियों के संदर्भ में विस्तार से अध्ययन हो रहा है। उनके व्यक्तित्व के निर्माण के लिए संघर्ष हो रहा है। वास्तव में मातृसत्तातमक से पितृसत्तात्मक का अवतरण स्त्री की सबसे बड़ी हार थी। स्त्री को धरती, माता, देवी कहा गया किन्तु वह पुरुष की संगी, मित्र कभी नहीं रही। पुरुषों ने अपनी सुविधा के मुताबिक स्त्री को विभिन्न रूपों में प्रस्तुत किया, लेकिन अपने समान नहीं बनने दिया। स्त्री को अपने अस्तित्व के लिए सदा से संघर्ष करना पड़ा है। समाज में स्त्री के प्रति जागृति लाना तथा नारी के स्वत्व के अस्तित्व एवं, पहचान को स्थापित करने के प्रयास को ही नारीवाद अथवा नारी विमर्श कहा जाता है। स्त्री के व्यक्तित्व की पहचान हेतु अनेक संघर्ष तथा आन्दोलन हो रहे हैं जिनका मुख्य उद्देश्य नारी के लिए एक सुखद भविष्य निर्माण करना है। स्त्री को निष्पक्ष न्याय मिले तथा उसके प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण का निर्माण हो तभी समाज में व्याप्त लिंगभेद समाप्त् हो सकेगा।

KeyWords: *नारीवादी आन्दोलन ,नारी सशक्तिकरण–नारी सबलीकरण, हिन्दी साहित्य ,स्त्री लेखन ।*

आज की स्त्री संक्रमण काल से दौर से गुजर रही है। अत्याधुनिक पाश्चात्य संस्कृति का व्योम मार्गीय पदार्पण ने कई मान्यताओं को तहस–नहस कर दिया है। विद्वानों का मत जो भी हो, किन्तु आकाशवाणी दूरदर्शन एवं अन्य दृश्य–श्रव्य सामग्री ने हमारे सांस्कृतिक विरासत को भूकम्पीय स्थितियों में कर दिया है। जिसमें कई पीढ़ियों से चली आ रही परम्परा छितर–बितर होने लगी है। आज स्वतंत्रता का अर्थ बदलकर स्वच्छन्दता का पोषक होने को आतुर है। ऐसे में महिला संगठन एक स्वस्थ मन मस्तिष्क की रचना और भटके विचार धारा को सही मार्गदर्शन का कार्य कर सकती है। और इस अर्थ युग में व्यक्ति और वस्तु का अन्तर स्पष्ट कर सकती है। विज्ञापन की दुनियाँ, फैशन की दुनियाँ , सुन्दरियों की दुनियाँ एवं इनकी प्रतियोगितायें आज हमारे सुदृढ़ सांस्कृतिक गरिमा के समक्ष चुनौती बनकर खड़ी है।

भारत में ही नहीं अपितु विश्व पटल पर नारी केन्द्रित समस्यायें, विकास, सुधार तथा उनकी समान भागीदारी का ज्वलंत प्रश्न उठाया जा रहा है। अनेक नारीवादी संगठन अनेक नारे गोष्ठियाँ, सम्वाद आदि आयोजित करके, उनकी समस्याओं को हल करके महिला सशक्तीकरण के लिए प्रयास कर रहे है। इनमें अमेरिका, इग्लैण्ड,

फ्रांस, आस्ट्रेलिया, रूस आदि अंग्रेजी देश हैं। मुस्लिम देश तथा तीसरी दुनिया के देशों में भी उनकी हिस्सेदारी बढ़ी है तथा उन्हें अनेक अवसर आगे बढ़ने के लिए दिये जा रहे हैं। आज भूमण्डलीकरण, उदारीकरण, निजीकरण, बाजारीकरण और कम्पनीकरण ने उनको अवसर उपलब्ध कराने के साथ ही साथ एक विक्रय वस्तु के साथ प्रायोजित किया है। प्रिन्ट मीडिया और इलेक्ट्रानिक मीडिया भी उन्हें माडलिंग और विज्ञापनों में उतारकर उनके सौन्दर्य को भुनाते हुए, उनकी देह दृष्टि को नग्न और अर्द्धनग्न प्रस्तुत करके विक्रय वस्तु बनाकर बेंच रहे हैं और अधिक से अधिक मुनाफा कमा रहे हैं। दिन प्रति दिन वह कम से कम वस्त्रों में विज्ञापनों में दृष्टव्य हैं। साबुन, तेल, तम्बाकू खाद्य प्रसाधन सामग्रियों पर विभिन्न मुद्राओं में इन्हें देखा जा सकता है। वर्तमान की फिल्मी दुनिया हालीवुड और वालीवुड समय–समय पर उनको भुनाती भी रहती है। एक मात्र अर्थोपार्जन करना ही लक्ष्य रह गया है। किसी ने यह ठीक ही कहा है कि ''वस्तु की तरह स्त्री भी बिकती रही है और आज भी बिक रही है। भूमण्डलीयकरण के इस दौर में मीडिया स्त्री को सेक्स सिम्बल में तब्दील कर देना चाहता है, वह भी अपनी सुन्दरता की कसौटी पर–बोल्ड एवं ब्युटीफुल। मुक्त बाजार व्यवस्था में बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ उसकी स्त्री छवि और सुन्दर देह को अपने हक में भुनाना चाहती है। नहीं तो यदि कोई स्त्री सुन्दर है, तो खिलाड़ियों की तरह कई वर्षों तक खिताब क्यों नही दिया जाता? आँकडों पर यदि गौर किया जाए तो हिन्दुस्तान में पाँच छः प्रतिशत से अधिक स्त्रियाँ किसी भी क्षेत्र में आगे नहीं हैं। जो मीडिया पर सामने दिख रही हैं, वे या तो मनोरंजन के क्षेत्र में हैं या मॉडलिंग में। संयुक्त राष्ट्रसंघ के अनुसार विश्व की 98 प्रतिशत पूँजी और 99 प्रतिशत बड़े–बड़े संस्थानों और बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के प्रबन्धन और निर्णय लेने वाले पदों पर पुरूषों का अधिकार है। जबकि पूरी दुनिया के कुल श्रम का दो से तीन भाग औरत करती है और कुल मजदूरी का एक तिहाई हिस्सा ही उन्हें मिलता है। इस नजरिये से तो समाज में सेकंड सेक्स का दोयम दर्जा भी उनका नही है।

भारत में निम्न, उच्च, मध्यम और आदिवासी रूप में स्त्रियों का विभाजन गौरतलब है। उनके कार्य,उनका ऐश्वर्य, श्रमशीलता,गरीबी सर्वत्र दिखाई पड़ती है। इस दृष्टि से विचार करें कि संसार में कहीं भी उनकी स्थिति बहुत अच्छी नहीं है। कुछ महिलाओं की स्थिति ठीक है जिनमें वे नेता, डॉक्टर, अफसर, इंजीनियर आदि के रूप में शोपीस के तौर पर प्रस्तुतीकरण हो रहा है। निचले वर्ग की स्त्रियाँ सभी देशों में विपन्नावस्था में हैं। तथा उन्हें सर्वाधिक श्रम करना पड़ता है। उनकी आर्थिक स्थिति दयनीय है। जबकि विश्व के आँकड़े ये दर्शाते हैं कि संसार में सर्वाधिक श्रम महिलाएँ ही करती हैं। किन्तु उसका मूल्य श्रम के अनुरूप नहीं मिलता है। इसके साथ ही दैहिक शोषण भी होता है। महिला संगठनों ने समस्याएँ तो उठाई हैं किन्तु उनके समाधान का सर्वसम्मत एवं समुचित समाधान का मॉडल प्रस्तुत नहीं किया गया।

आज की नारी राजनीति, कारोबार, कला तथा नौकरियों में पहुँचकर नये आयाम गढ़ रही हैं। भूमण्डलीकृत दुनियॉ में भारत और यहॉ की नारी ने अपनी एक नितांत सम्मानजनक जगह कायम कर ली है। आंकड़े दर्शाते हैं कि प्रतिवर्ष कुल परीक्षार्थियों में 50 प्रतिशत महिलाऐं डाक्टरी की परीक्षा उत्तीर्ण करती हैं। आजादी के बाद लगभग बारह महिलाएँ विभिन्न राज्यों की मुख्यमंत्री बन चुकी हैं। भारत के अग्रणी साफ्टवेयर उद्योग में इक्कीस प्रतिषत पेषेवर महिलाएँ हैं। फौज, राजनीति, खेल, पायलट तथा उद्यमी सभी क्षेत्रों में जहॉ वर्षों पहले तक महिलाओं के होने की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। वहाँ सिर्फ नारी स्वयं को स्थापित ही नहीं कर पायी है बल्कि वहाँ सफल भी हो रही हैं।

शास्त्रों में नारी की महत्ता और उसकी गरिमा का वर्णन करते हुए कहा गया है कि नारी ब्रहा विद्या है, श्रद्वा है, शक्ति है, पवित्रता है, कला है और सब कुछ है जो संसार में सर्वश्रेष्ठ के रूप में दृष्टिगोचर होता है। नारी मूर्तिमान कामधेनु है, अन्नपूर्णा है, सिद्वि है और सब कृछ है जो प्राणी के समस्त अभावों, कष्टों के निवारण करने में समर्थ है। प्राचीन भारतीय समाज में नारी का एक विषिष्ट गौरवपूर्ण स्थान था। वैदिक काल में दैवी स्थान पर प्रतिष्ठित थी। उस समाज में ईष्वर की वन्दना भी सर्वप्रथम माता अर्थात् नारी के रूप में की जाती थी यथाश्त्वमेव माता च पिता त्वमेव..... । उस युग में गागी,अपाला, मैत्रेयी,कात्यायनी आदि विदुषियों ने अपने दैवीय तेज से नारी के गरिमापूर्ण तेज रूप को सिद्ध कर दिया था। व्यवहार मे पुरूष मर्यादा से नारी मर्यादा सदा ही उत्कृष्ट मानी गई.... ''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः। यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः। ''आर्य संस्कृति में नारी समाज के प्रति यह मात्र शाब्दिक उद्भावना का प्रदर्शन नही था अपितु भारतीय गृहस्थ जीवन में पदे–पदे इसकी व्यावहारिकता देखी जाती थी। हिन्दू जीवन में नारी मर्यादा सदैव सुरक्षित रखने का विशेष ध्यान रखा था –

'' पिता रक्षति कौमारे भर्ता रक्षति यौवने। रक्षन्ति स्थविरे पुत्रा न स्त्रीस्वातंन्त्र्यमर्हति ।।''

धर्मशास्त्र का यह कथन नारी स्वतन्त्रता का अपहरण नहीं है अपितु नारी के निर्बाध रूप से स्वधर्म पालन कर सकने के लिए बाह्य आपत्तियों से उसकी रक्षा हेतु पुरूङ्व समाज पर डाला गया उत्तरदायित्व है। इसलिए धर्मनिष्ठ पुरूङ्व इसे भार न मानकर ,धर्मरूप में स्वीकार अपना कल्याणकारी कर्त्तव्य समझता है। पौराणिक युग में नारी वैदिक युग के दैवी पद से उतरकर सहधर्मिणी के स्थान पर आ गई थी। धार्मिक अनुष्ठानों और याज्ञिक कर्मो में उसकी स्थिति पुरूष के बराबर थी। कोई भी धार्मिक कार्य बिना पत्नी नहीं किया जाता था। श्रीरामचन्द्र ने अष्वमेध के समय सीता की हिरण्यमयी प्रतिमा बनाकर यज्ञ किया था। यद्यपि उस समय भी अरून्धती (महर्षि वषिष्ठ की पत्नी), लोपामुद्रा(महर्षि अगस्त्य की पत्नी),अनुसूया (महर्षि अत्रि की पत्नी) आदि नारियाँ दैवी रूप की प्रतिष्ठा के अनुरूप थी तथापि ये सभी अपने पतियों की सहधर्मिणी ही थीं। मध्यकाल में विदेशियों के आगमन से स्त्रियों की स्थिति में जबर्दस्त गिरावट आयी। अशिक्षा और रूढियाँ जकड़ती गई,घर की चाहरी दीवारी में कैद होती गई और नारी एक अबला,रमणी और भोग्या बनकर रह गई। आर्य समाज आदि समाज –सेवी संस्थाओं ने नारी शिक्षा आदि के लिए प्रयास आरम्भ किये।

बीसवीं सदी के आरम्भ में स्त्रियाँ घर से निकलने के बारे में सोच भी नहीं सकतीं थी। घर के अन्दर भी घूंघट में रहना होता था शिक्षा उनसे कोसों दूर थी। वह पुरूष की आज्ञापालक थी। पुरूष की बात को ब्रह्मवाक्य और तर्क करना अक्षम्य अपराध था। लडकियों के लिए विद्यालय खोले गये तो रूढ़िवादी तबके ने विरोध किया। समाज से लड़कर बेटियों को विद्यालय भेजने वालों का सामाजिक एवं जातीय बहिष्कार कर दिया जाता था। इस विरोध के बावजूद नारी शिक्षा में कुछ वृद्वि हुई।

स्वतन्त्रता के पश्चात् लडकियों की शिक्षा को सामाजिक स्वीकार्यता मिलने लगी। कुछ स्त्रियाँ नौकरी के लिए कदम बढ़ाने लगीं तथा राजनीति में प्रवेश की भी शुरूआत हुई। साठ–सत्तर दषक में नारी अपनी अहम भूमिका के प्रति जागरूक होकर अपने अधिकारों के लिए हिम्मत जुटाने लगी। अस्सी के दषक में महिला संगठन बनने लगे,आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर होने लगी लेकिन फिर भी पुरूष का एक वर्ग इस स्थिति से क्षुब्ध भी था। नब्बे के दशक में भूमण्डलीकरण का दौर दस्तक दे रहा था। दुनिया बदल रही थी। नारियों में आत्मविश्वास व

वेशभूषादि की दृष्टि से एक नई क्रान्ति जन्म ले चुकी थी। सन् 1992ई0 में देश की पंचायतों में 33 प्रतिशत आरक्षण से उनकी सामाजिक व आर्थिक स्थिति में बदलाव आया। इस एक ही फैसले से देश की दस लाख नारियाँ सीधी राजनीति में आ गईं। लम्बे समय तक यह माना जाता रहा कि निर्वाचित महिला अपने पति या पुरूङ्ख सम्बन्धी स्टैंप मात्र है,लेकिन अब स्थिति बदलती जा रही है और वह जैसे–जैसे शिक्षित और जागरूक हो रही है,अपनी भूमिका खुद पूरी षिद्दत के साथ निभा रही है।

बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध और अब इक्कीसवीं सदी के प्रारम्भ में बराबरी व्यवहार वाले जोडे बनने लगे हैं। नौकरी वाली नारी के साथ पुरूङ्ख की मानसिकता में बदलाव आया है। पहले नौकरी वाली स्त्री के पति को ''उसकी कमाई खाने वाला'' कह कर चिढाया जाता था। आज यह सोच बदल चुकी है। स्त्री स्वातंत्र्य में अर्थशास्त्र का योगदान अद्भुत है। स्त्रियाँ आजं धन कमाने लगी हैं तो पुरूष की मानसिकता में भी परिवर्तन हो आया है। आर्थिक दृष्टि से नारियाँ अर्थचक्र के केन्द्र की ओर बढ़ रही हैं। बिस्टन कंसल्टेन्सी ग्रुप एक ताजा रिपोर्ट के अनुसार विश्व के उपभोक्ता कुल लगभग 18.4 खरब डालर बाजार खरीददारी पर खर्च करते हैं और इस राशि का पैंसठ प्रतिशत हिस्सा अर्थात् बारह खरब डॉलर नारी उपभोक्ता खर्च करती हैं। सन् 2006में आई0 टी0 इण्डस्ट्री में चार लाख इक्कीस हजार नारियाँ थीं,सन् 2008 में यह संख्या बढकर छःह लाख सत्तर हजार हो गई। यहाँ तक कि तकनीकि विभागों में नारी अनुपात छत्तीस प्रतिषत के स्कोर पर है। विज्ञापन की दुनियां में नारियाँ बहुत आगे हैं। बहुत कम ही ऐसे विज्ञापन होंगे जिनमें नारी न हो लेकिन विज्ञापन में अष्लीलता चिन्तन का विषय है। इससे समाज में विकृतियाँ भी बढ रही है। जिसने अर्थशास्त्र के समाजशास्त्र को बोना बना दिया है।

नारी विषयक चिंतन के सम्बन्ध में आजकल मार्च सन् 2007 ई0 पत्रिका में जगत सिंह विष्ट द्वारा नारी की सामाजिक स्थिति पर महादेवी के चिंतन की विवेचना में महादेवी के अनुसार नारी चिंतन इस प्रकार है – नारी चिंतन समाज सापेक्ष है। अतः वह सुस्पष्ट सुव्यवस्थित, तटस्थ और निष्पक्ष हैं। वे नारी के जीवन की कठिनाईयों के लिए न केवल पुरूष को दोष देती हैं बल्कि इसके लिए वे नारी को भी समान रूप से दोष देती हैं। इसीलिए वे नारी चिंतन का आरम्भ नारियों से ही करती हैं, जिन्हें अपनी कठिनाइयों के कारणों की जानकारी नहीं। महादेवी के विचार विमर्श से साफ संकेत मिलता है कि केवल कार्य समाप्त कर देने से किसी समस्या का हल सम्भव नहीं होता,जब तक कि उसका कारण पताकर उसे नष्ट न किया जाय।

कथादेश पत्रिका के जनवरी सन् 2009ई0 के विशेषांक में ओमशर्मा ने मन्नू भण्डारी से कुछ बात–चीत की उसमें वह बिन्दु भी शामिल है–जब ओमा शर्मा ने मन्नू भण्डारी से पूछा कि स्त्री–विमर्श के विषय में आपका क्या सोचना है। उस पर मन्नू भण्डारी ने कहा– वैसे स्त्री विमर्श का असली ताल्लुक ड्राइंग रूम में बैठकर जुगाली करना नहीं, वास्तविक जिन्दगियों में फर्क डालना है। इनका स्त्री–विमर्श मात्र वौद्धिक है, जबकि मैं कर्म के स्त्री विमर्श में विश्वास करती हूँ जो गाँव देहात में अनेक महिला संगठन कर रहे हैं।

हॉलाकि हिन्दी साहित्य लेखन में विभिन्न कहानियों, उपन्यासों, लेखों, काव्यों में अनेक स्त्री समस्याओ से सम्बन्धित प्रश्न उठाये जा रहे हैं। इनमें स्त्री लेखिकाओं में मृणाल पाण्डे, मृदुलागर्ग, चित्रा मुद्रगन मन्नू भण्डारी, ममता कालिया, प्रभा खेतान, शाशिकला, नमिता सिंह, रोहिणी आदि के विचार पठनीय हैं। उनका वैचारिक पक्ष प्रखर है किन्तु इसके पीछे लेखिकाओं का असफल दाम्पत्य जीवन भी एक कारण है। उनके टकराव का कारण वैयक्तिक है।

वस्तुतः इस समस्या पर गहराई से विचार करने की आवश्यकता है केवल विद्रूपताओं को उजागर करने से विशेष लाभ नहीं होने वाला है। इस प्रकार उपर्युक्त लोकप्रिय, लेखिकाओं, के अतिरिक्त अन्य कुछ चर्चित नाम हैं जिसने वर्तमान के साहित्य में अपनी विशेष छवि स्थापित की है उनमें हैं, सुषमा बेदी, ज्योत्सना मिलन, डॉ. कृष्णा अग्निहोत्री, डॉ सरोजनी प्रीतम, नाटकों के क्षेत्र में भारतीय महिलाएँ में लोकप्रिय नाम–गिरीश रस्तोगी, अर्चना, वर्मा, डॉ. कमल कुमार, डॉ. भावना, शैलजा सक्सेना, स्नेह ठकोर, पुष्पिता अवस्थी, अर्चना पैन्यूली, संजीता वर्मा, डॉ. इंदिरा आनंद, रेणु, राजवंशी गुप्ता, रेखा मित्रा, नीना पाल, सत्यभामा, आडिल, क्षमा शर्मा, रति सक्सेना, दिव्या माथुर, उषा राजे सक्सेना, तोषी अमृता, पूर्णिमा बर्मन, डॉ. सुधा ओम ढींगरा, डॉ. इला प्रसाद, पुष्पा सक्सेना, सुदर्शन प्रियदर्शिनी, विधा बिंदु सिंह, सुधा, अरोड़ा, भी नाटकों के अलावा जो अन्य विधाओं में भी लेखन कार्य कर रहीं हैं, उनमें चर्चित नाम हैं– डॉ. सुशीला गुप्ता, अहिल्या मिश्रा, इंदू बाली, लक्ष्मी कुमारी चूड़खल, पद्मा सचदेव, सावित्री डागा, सुभदा पाण्डेय, राज बुद्धिराजा, उषा किरण खान, डॉ. शांति जैन, बुद्धिराजा, ऋता शुक्ला, डॉ. मधु धवन, डॉ. सत्यभामा आडिल, क्षमा शर्मा, रति सक्सेना दिव्या माथुर, उषा राजे सक्सेना, नीना पाल, शैल अग्रवाल, अचला शर्मा, कादंबरी मेहरा, पुष्पी भार्गव, डॉ. योगेश्वरी शास्त्री, इला कुमारी, मीनाक्षी जोशी, सुधा अरोड़ा, डॉ. राजम नटराजन, तेजी ग्रोवर, सुलभा कोरे, शील निगम, मिथिलेश कुमारी मिश्र, मृदुला सिन्हा, सुखदा पांडेय, उर्मिला कोल, किरण घई, उषा ओझा, डॉ. शरद सिंह, डॉ. सुनीता खत्री वीणा सिन्हा, डॉ. अनुसुइया अग्रवाल, लतिका भावे, शकुंतला शर्मा, डॉ. स्वाति तिवारी नलिनी शर्मा, शकुंतला तरार, सुधा वर्मा, अलका पाठक, डॉ. उर्मिला शिरीष मधु कांकरिया, शर्मिला बोहरा जालान, अरूणा कपूर, उषा जायसवाल, उलका सिन्हा, गीता श्री, इंदिरा मोहन, गीतांजलि श्री, बंदना राग, जयंती रंगनाथ, कानन, भींगन कमला। रश्मि रमानी, डॉ. आशा पाण्डेय, डॉ. दीप्ति गुप्ता, डॉ. मधु बरूआ, डॉ. स्मिता मिश्र, कुसुम अंसल, मनीषा, मृदुला हालन, डॉ. प्रेमलता नीलम, पैमिली मानसी, प्रभा शर्मा, डॉ. सरिता शर्मा, डॉ. पूनम शर्मा, रीतारानी पालीवाल, सविता सिंह, उषा महाजन, सुजाता चौधरी, वर्तिका नंदा, अंजु दुआ जैमिनी, धोरा खंडेलवाल, गीतिका गोयल, मधु संधू, मधुर कपिला, रेखा राजवंशी, बूलाकार, सीमा गुप्ता, नमिता राकेश, पद्मा शर्मा, डॉ. कामिनी, नीलेश रघुवंशी, निर्मल मुराड़िया, रंजना जायसवाल, रमा सिंह, नीरजा माधव, इरा सक्सेना, डॉ. मीना अग्रवाल, नमिता सिंह, मधु चतुर्वेदी, कात्यायनी, नीरजा द्विवेदी, आभा गुप्ता ठाकुर, अलका प्रमोद, डॉ. मुक्ता, डॉ. अंजना सुधीर, प्रिया अग्रवाल, जोहरा अफजल, स्वर्ण ज्योति डॉ0 सुप्रिया पी आदि भारतीय महिलाओं ने हिंदी साहित्य के लेखन में अपनी महत्वपूर्ण जगह बनाली। इस प्रकार साहित्यिक परिदृश्य में महिलाओं की संख्या में निरन्तर वृद्धि हो रही है। नई सहत्राब्दी का साहित्य महिलाओं के साहित्य से फल–फूल रहा है।

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि समय के साथ–साथ प्रत्येक समाज की व्यवस्था में परिवर्तन होता हैं। आजादी के पूर्व से लेकर आजतक देखे तो नारी की पहुँच समाज के प्रत्येक क्षेत्र (साहित्यिक, राजनैतिक, आर्थिक, धार्मिक, विज्ञान, खेल एवं व्यापार आदि) में है। वे अब धीरे–धीरे शिक्षा के माध्यम से अपने जीवन में क्रान्तिकारी परिवर्तन कर रही है लेकिन उसे ऊँचाई के शिखर को छूना है–उन सुविधा भोगी एवं साधन सम्पन्न स्त्री वर्ग एवं पुरूष वर्ग से सावधान रहना होगा जो केवल स्त्री विमर्श एवं दलित विमर्श को बड़े–बड़े महलों एवं मंचों का खिलौना बना रहे हैं। जो लोग जब चाहे जैसा चाहें वातानुकूलित कमरों में बैठकर सुगन्धित एवं सुसज्जित शरीर से स्त्री विमर्श को प्रस्तुत कर रहे हैं ऐसे स्त्री सुधारवादी ठेकेदारों से चाहे वे

पुरूष हों या स्त्री दोनों से सावधान रहने की जरूरत है।

संदर्भ संदर्भ ग्रन्थ

1. दि संडे राष्ट्रीय साप्ताहिक समाचार पत्र दिल्ली, नोएडा, देहरादून से प्रकाशित उत्तराखण्ड संस्करण, 2011 लेख–सृजन संसार के अंतर्गत, डॉ अमित शुक्ल, रीवा,मप्र.
2. महिला सशक्तिकरण, भाग 1, संपादक, डॉ. वीरेन्द्र सिंह यादव, ओमेगा पब्लिकेशन दरियागंज, नई दिल्ली,2010
3. महिला सशक्तीकरण दशा एवं दिशा, संपादक–अखिलेश शुक्ला, गायत्री पब्लिकेशन रीवा, पृष्ठ – 519
4. आउटलुक, पाठक साहित्य सर्वे मासिक पत्रिका जनवरी 2011 सफदरजंग, नई दिल्ली
5. स्त्री परम्परा और आधुनिकता– सं0 रजाकिशोर, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली,संस्करण 2004,
6. उत्तर प्रदेश जनवरी, 1998, अपने भीतर का समय– मैत्रेयी, पुष्पा
7. भारतीय नारी, दशा दिशा, आशारानी व्हौरा
8. स्त्रीवादी विमर्श– समाज और साहित्य– क्षमा शर्मा,
9. स्त्री उपेक्षिता– सीमोन द वोउवा, प्रस्तुति डॉ0 प्रभा खेतान, संस्करण–2002, हिन्द पाकेट बुक्स, प्रा0लि0 नई दिल्ली।
10. मिलकर मांगेगे तो आकाश मिलेगा– पद्मजा शर्मा, प्रसंग पत्रिका, अंक 16 संस्मरण अंक, सम्पादक शम्भु बादल
11. कविता का कहानीपन, अनामिका वागर्थ, मार्च 2006, सं0 रवीन्द्र कालिया
12. स्त्री विमर्श और सामाजिक आन्दोलन– डॉ0 राजनारायण